A–342

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

BASL–201

पद्य गद्य एवं व्याकरण

Bachelor of Arts (BA)

2nd Year Examination, 2024 (June)

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट : – यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट : – खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. महाकवि कालिदास का परिचय देते हुए कालिदास की प्रमुख रचनाओं के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन कीजिए।

2. अधोलिखित पद्यों की व्याख्या कीजिए :

(क) क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो,

न वंचनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।

अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा,

हितं मनोहरि च दुर्लभं वचः॥

(ख) विशंकमानो भवतः पराभवं

नृपाासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।

दुरोदाच्छद्मजिता समीहते,

नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः॥

3. निम्नलिखित पद्यों की व्याख्या कीजिए :

(क) यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे।

भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्य पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्॥

(ख) दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीमिवान्धकारम्।

क्षेद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्ववमुच्चैः शिरसां सतीव॥

4. उपसर्गों का महत्व बताते हुए लघु सिद्धान्त कौमुदी में परिगणित उपसर्गों को लिखिए एवं उपसर्गों से निर्मित आठ शब्द बनाइए।

5. महर्षि पाणिनि के संस्कृत व्याकरण को दिये गये योगदान का वर्णन करते हुए माहेश्वर सूत्रों की वैज्ञानिकता का प्रतिपादन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट : – खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. आचार्य बाणभट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।

2. अधोलिखित गद्य की हिन्दी में व्याख्या कीजिए :

गुरुपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलस्नानम् अनुपजातपालितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरूकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राम्यं कर्णाभारणम्, अतीतज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः विशेषेण राज्ञाम् विरला हि तेषामुपदेष्टारः। प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्,। उद्याम दर्प श्वयथुस्थगितश्रवणविवराश्चोपदिश्यमानमपि ते न श्रृण्वन्ति। श्रृण्वन्तोऽपि च गजनिमीलितेनावधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्। अहंकार–दाहज्वर–मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः।

3. निम्नलिखित पद्य की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं,
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥

4. अधोलिखित सूक्ति की व्याख्या कीजिए :

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

5. निम्नलिखित पद्यों की सिद्धि कीजिए :

   (क) हरये।

   (ख) मध्वरि :।

6. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या कीजिए :

   (क) ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः

   (ख) समाहारः स्वरितः।

7. कादम्बरी में मन्त्री शुकनास के द्वारा दिये गये उपदेश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

8. कुमारसम्भवम् की काव्यकला का वर्णन कीजिए।

****